PUBLICATION : PRABHAT KHABAR (PRK)
EDITION : KOLKATA
DATE : 9TH SEPTEMBER 2012, PAGE NO. : 1

पॉपुलर लेखन का बढ़ा क्रेज

ट्रेन हो या बस या फ्लाइट, इन दिनों हर तरफ युवाओं को उपन्यास, या कोई रोचक टाइटल वाली किताब पढ़ते देखा जा सकता है. ऐसे समय में जब यह कहा जा रहा है कि लोग किताबों से दूर हो रहे हैं और लिटरेचर पढ़ने की संस्कृति समाप्त होती जा रही है, उस दौर में ये तसवीर कुछ और ही कहानी बयां करती दिखती है. पिछले कुछ वर्षों में देश की रीडिंग हैबिट में बदलाव लाने का काम किया है, अंगरेजी में लिखने वाले उन भारतीय लेखकों ने जो युवाओं की जुबान में उनकी बात कर रहे हैं. अब तो इनके हिंदी अनुवाद भी काफी लोकप्रिय हो रहे हैं. पॉपुलर लेखन के मौजूदा परिदृश्य पर **अवनीश मिश्रा** की रिपोर्ट..

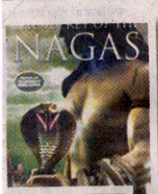

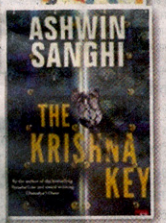

सुन सकते हैं और उसे वह कहानी सुना सकते हैं, जिसे वह सुनना चाहता है.

इस कहानी को शुरू करने के कई बिंदु हो सकते हैं, लेकिन हम आज से करीब आठ साल पहले लौटते हैं. किताब की दुकानों पर 'फाइव प्वाइंट समवन' किताब नजर आती है. लेखक का नाम : चेतन भगत. परिचय : आइआइटी दिल्ली और आइआइएम अहमदाबाद से पढ़ाई, इंवेस्टमेंट बैंकर. इसके बाद उनकी नयी किताब आयी वन नाइट @ द कॉल सेंटर. ये दोनों किताबें बिक्री के नये रिकॉर्ड स्थापित करती हैं, रूपा पब्लिकेशन, जिससे चेतन भगत की अब तक की सभी किताबें छपी हैं, के अनुसार भगत की इन दोनों किताबों की सम्मिलित बिक्री 10 लाख से ज्यादा का आंकड़ा पार कर चुकी है. जब वन नाइट @ द कॉलसेंटर बाजार में आयी तो पहले तीन दिन में 50000 कॉपियों की पहली प्रिंट बाजार से हाथों-हाथ उठा ली गयी. यहां से चेतन भगत सिर्फ पास टाइम लेखक नहीं रह जाते, वे सेलिब्रिटी में तब्दील में हो जाते हैं. उनकी अगली तीनों किताबें थ्री मिस्टेक्स ऑफ माइ लाइफ, टू स्टेट्स और रिवोल्यूशन 20-20 दुकानों से ऐसे उठायी जाती हैं, जैसे सुबह के समय अखबार वाले के यहां से अखबार खरीद

आइआइटी दिल्ली और आइआइएम अहमदाबाद से पढ़ाई करके एक इंवेस्टमेंट बैंकर के तौर पर करियर शुरू करने वाले भगत को न्यूयॉर्क टाइम्स ने 2008 में भारत का सबसे अधिक बिकने वाला लेखक करार दिया था. उनकी पहली किताब *फाइव प्वाइंट समवन* से लेकर *वन नाइट @ द कॉल सेंटर, थ्री मिस्टेक्स ऑफ माइ लाइफ, टू स्टेट्स* और *रिवोल्यूशन 20-20* तक सभी ने बिक्री के रिकॉर्ड स्थापित किये हैं. रूपा पब्लिकेशन जिससे चेतन भगत की सभी किताबें छपी हैं, के अनुसार चेतन भगत की *फाइव प्वाइंट समवन* और *वन नाइट @ द कॉल सेंटर* की सम्मिलित बिक्री 10 लाख का आंकड़ा पार कर चुकी है. *टू स्टेट्स, रिवोल्यूशन20-20* की भी पांच लाख से ज्यादा बिक्री हुई है.

अमीश त्रिपाठी

अमीश त्रिपाठी की किताब इम्मोर्टल्स ऑफ मेलूहा और सीक्रेट ऑफ नागाज पाठकों के बीच खासी लोकप्रिय हुई हैं. आइआइएम कलकत्ता के पासआउट अमीश की इन किताबों में मिथक, इतिहास, रहस्य-रोमांच से भरी दिलचस्प दास्तानगोई हैं. अमीश त्रिपाठी बताते हैं कि उनकी दोनों किताबों की कुल मिलाकर अभी तक साढ़े सात लाख से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं. अमीश खुद को बिल्कुल नॉन फिक्शनल इंसान मानते हैं और अपनी किताबों को शिव का आशीर्वाद कहते हैं. अमीश की किताबों का *मेलूहा के मृत्युंजय* और *नागाओं का रहस्य* नाम से अनुवाद हुआ है

रतीय प्रकाशन जगत इन दिनों सितारों की रोशनी से जगमगा रहा है. आखिर यह जगमगाहट क्यों न हो, उसके पास नाज करने के लिए खालिस भारतीय बेस्ट सेलर लेखक हैं. "वन मिलियन कॉपी सोल्ड' की गौरव भरी घोषणाएं हैं. हजारों कॉपियों के प्री सेल ऑडर्स हैं. यह दरअसल, नये उभरते हुए लेखकों की सफलता की वह कहानी है, जो पिछले सात-आठ साल से धीरे-धीरे एक क्रांति की शक्ल लेती जा रही है और जिसने भारत के पब्लिशिंग व्यवसाय की सूरत को बदल कर रख दिया है.

अब लेखकों की लोकप्रियता बाया बुकर प्राइज या विदेशों में धूम मचाने की खबरों के नहीं आ रही. भारतीय लेखक ओवरसीज (विदेशी) बाजार में सफलता के पुराने नुस्खों के सहारे कहानियां लिखने के बजाय भारतीय पाठकों के लिए किताबें लिख रहे हैं. दरअसल, उन्हें विदेशी बाजार की कोई जरूरत भी नहीं क्योंकि भारत में ही उनकी किताबें हजार दो हजार नहीं, लाखों की संख्या में बिक रही हैं. यह उदारीकरण के बाद के भारत की 'सफलता' की अनगिनत कहानियों में से शायद सबसे ताजातरीन कहानी है, जिसके कई पन्ने अभी पलटे जाने बाकी हैं. भारत के नयी पीढ़ी के अंगरेजी लेखकों की सफलता की कहानी का उदारीकरण से गहरा नाता है. यह बेवजह नहीं है कि अंगरेजी लेखकों की नयी पीढ़ी में ज्यादातर चेहरे ऐसे हैं, जिनका वास्ता साहित्य या लेखन से पहले कभी नहीं रहा. इनमें से ज्यादातर कॉरपोरेट जगत में अपने लिए खास मुकाम बनाने वाले युवा हैं. इनका दावा है कि ये यंग इंडिया की धड़कनों को किसी और के मुकाबले बेहतर

अश्विन सांघी

जाते हैं. चेतन भगत अब सिर्फ एक बेस्ट सेलर लेखक नहीं हैं. मीडिया चेतन भगत को यंग इंडिया की यंग आवाज बतलाता है. वे न्यूज चैनलों पर दिखायी देते हैं, टाइम्स ऑफ इंडिया के लिए संडे कॉलम लिखते हैं. देश भर में घूमघूम कर मोटिवेशनल स्पीच देते हैं. न्यूयॉर्क टाइम्स उन्हें 2008 में भारत का सबसे ज्यादा बिकने वाला अंगरेजी लेखक करार देता है. टाइम मैगजीन उन्हें विश्व के सबसे ज्यादा प्रभावशाली 100 व्यक्तियों में शुमार करती है. वह भी तब जब उनके पास न तो कोई अंतरराष्ट्रीय सम्मान है और न आलोचकों को उनकी किताबों में किसी किस्म की साहित्यिक गुणवत्ता नजर आती है.

फाइव प्वाइंट समवन से शुरू होने वाली कहानी 2010 में आयी अमीश त्रिपाठी की किताब 'इम्मोर्टल्स ऑफ मेलूहा' से अचानक एक क्रांति की शक्ल लेती दिखाई देती है. चेतन भगत की तरह मैनेजमेंट पृष्ठभूमि से आने वाले और आइआइएम कलकत्ता के पासआउट अमीश की किताब अपने आकर्षक कवर और कवर के भीतर मिथक, इतिहास, रहस्य-रोमांच से भरी दिलचस्प दास्तानगोई के कारण पाठकों को काफी पसंद आती है. और हफ्ते भर के भीतर देश के बेस्ट सेलर में शुमार हो जाती है. भगवान शिव पर ट्राइलॉजी की दूसरी किताब 'सीक्रेट ऑफ नागाज' भी पाठकों के बीच खासी लोकप्रिय होती है और चंद महीने के भीतर इसकी एक लाख से ज्यादा प्रतियां बिक जाती हैं. अमीश त्रिपाठी बताते हैं कि उनकी दोनों किताबों की कुल मिलाकर अभी तक साढ़े सात लाख से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं.

अमीश की ही तरह अगर किसी एक नाम ने खुद को पॉपुलर लेखकों के तौर पर स्थापित किया है तो वह है अश्विन सांघी का. जहां अमीश का जोर मिथक की ओर है, तो वहीं अश्विन सांघी, जो मूल रूप से एक बिजनेस मैन हैं, अपने उपन्यास की कहानी के लिए इतिहास का इस्तेमाल करते हैं. उनकी पहली 'द रोजावल लाइन' (2008) किताब कश्मीर के रोजाबल दरगाह की उस मान्यता से जुड़ी हुई है, जिसके मुताबिक इस दरगाह में ईसा मसीह की अस्थियां सुरक्षित हैं. सांघी की दूसरी किताब 'चाणक्याज चैंट' भी बिक्री के कीर्तिमान स्थापित करने में कामयाब रही है. उनकी तीसरी किताब 'कृष्णाज की' भी बाजार में आ चुकी है.

अमीश खुद को बिल्कुल नॉन फिक्शनल इंसान मानते हैं और अपनी किताबों को शिव का आशीर्वाद कहते हैं. दिलचस्प यह है कि अमीश कुछ समय पहले तक एक तरह से नास्तिक थे, लेकिन शिव पर लिखी किताबों ने उन्हें शिव भक्त बना दिया है. अमीश ने जब इम्मोर्टल्स ऑफ मेलूहा लिखने की शुरुआत की, तो बिल्कुल कॉरपोरेट स्टाइल में पहले एक्सेल शीट पर उसकी प्लानिंग की. लेकिन यह मैनेजमेंटी तरीका काम नहीं आया. अमीश के मुताबिक जब तक उन्होंने प्लॉट पर नियंत्रण रखने की कोशिश की, वे कुछ नहीं लिख सके. तब उनकी पत्नी ने उन्हें सलाह दी कि कहानी जैसे बढ़ती है, बढ़ने दो उस पर नियंत्रण करने की कोशिश मत करो. उन्होंने ऐसा ही किया और कहानी बनती गयी. अगर आज अमीश यह कहते हैं कि कहानी वे नहीं लिखते, बस उसके माध्यम भर हैं, तो उसमें उनकी शिव के प्रति गहरी आस्था ही प्रकट होती है. अश्विन सांघी अपनी किताबों के लिए प्वाइंट दर प्वाइंट तैयारी करते हैं और लिखना शुरू करने से पहले पूरे उपन्यास का खाका तैयार कर लेते हैं. तीन-तीन बेस्ट सेलर किताबों के बाद भी अगर वे खुद को ऑथर मानने की जगह कहानियां सुनाने वाला ही मानते हैं, तो इसे उनका बड़प्पन ही कहा जा सकता है. दिलचस्प यह है कि अश्विन सोमवार से शुक्रवार तक अपने ऑफिस में जम कर काम करते हैं और शनिवार एवं रविवार को किताब लिखते हैं. बाकी दिन भी वे घर लौट कर किताब पर काम करते रहते हैं. किताब लिखने के लिए वे चार हफ्ते की बुक हालिडे लेते हैं और उसी में किताब को अंतिम शक्ल देते हैं.

मूल रूप से व्यवसायी अश्विन सांघी की तीन किताबें आ चुकी हैं और तीनों ने बिक्री के कीर्तिमान स्थापित किये हैं. पहली किताब *द रोजावल लाइन* से लेकर *चाणक्याज चैंट* और *कृष्णाज की* तक में उन्होंने इतिहास-मिथक का रहस्य लिया है और उसे थ्रिलर का रूप दिया है. उनकी पहली किताब *द रोजावल लाइन* कश्मीर के रोजाबल दरगाह की उस मान्यता से जुड़ी हुई है, जिसके मुताबिक वहां ईसा की अस्थियां गड़ी हैं. अश्विन सोमवार से शुक्रवार काम करते हैं और शनिवार-रविवार को किताब लिखते हैं. वे अपने लेखन के लिए अपने नाना जी के शुक्रगुजार हैं जिन्होंने उनमें पढ़ने का संस्कार पैदा किया. उमर खय्याम की रुबाइयां और गीतांजलि उनकी पसंदीदा किताबें हैं.

शेष पेज चार पर

हिमालय को देखती उम्मीद

पुराना टिहरी डूब गया, लेकिन उसे डूब से बचाने के लिए संघर्ष करने वाले शख्स में जिंदगी के 85वें पड़ाव में आकर भी उम्मीद का आकाश बाकी है. जंगल और जल को बचाने के लिए किये गये आंदोलनों के पन्ने उनके झोले से अब भी झांकते हैं, इस बात की तसदीक करते हुए कि ये इतिहास में दर्ज होकर भी नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा बने रहेंगे. यह झोला है गांधी की राह पर चलते हुए जनांदोलनों का खास चेहरा बने सुंदरलाल बहुगुणा का. उम्र की सीमाएं अब उन्हें पहले की तरह लंबी यात्राएं और आंदोलन करने की इजाजत नहीं देतीं. इसलिए वे अपने कमरे की खिड़की से हिमालय को देखते हैं और उसकी हिफाजत की फिक्र ओढ़कर पेड़ लगाते हैं. पेड़ लगाने का संदेश देते हैं. उनकी बात कितनी सुनी जा रही है, इसकी परवाह नहीं करते. कहते हैं, 'हम तो स्वराज आंदोलन के सिपाही हैं, जब तक सपने साकार नहीं हुए तब तक संघर्ष करते रहेंगे. बढ़ती उम्र के कारण शरीर अब ज्यादा भागदौड़ की इजाजत नहीं देता. लेकिन पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आखिरी सांस तक प्रयास करते रहेंगे.'

टिहरी गढ़वाल में 9 जनवरी 1927 को जन्मे सुंदरलाल बहुगुणा का पूरा जीवन आजादी की लड़ाई से लेकर पर्यावरण को बचाने तक के लिए किये गये संघर्षों से भरा है. वे मात्र तेरह वर्ष की उम्र में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गये. 17 साल की उम्र में जेल गये. अस्पृश्यता को मिटाने के लिए टिहरी में ठक्कर बापा छात्रावास की स्थापना के साथ गंगोत्री, यमुनोत्री तथा बूढ़ा केदार जैसे मंदिरों में हरिजनों को प्रवेश दिलाने की लड़ाई लड़ी. विवाह के बाद पत्नी विमला नौटियाल के साथ मिलकर अपने गांव सिलयारा में नवजीवन आश्रम की स्थापना की. पहाड़ में चले शराबबंदी आंदोलन के लिए सत्याग्रह किया. चिपको आंदोलन से जुड़े. उनके प्रयास से दुनिया भर में यह आंदोलन पेड़ बचाने की मिसाल बन गया. टिहरी बांध के निर्माण के खिलाफ पहले 45 दिन फिर 74 दिन का आमरण अनशन किया. अस्सी के दशक में पारिस्थितिकी के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए की कश्मीर से कोहिमा तक 4870 किमी की पैदल यात्रा की. उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में एक हजार मीटर से ऊपर के क्षेत्रों में हरे पेड़ों के कटान पर सरकार की तरफ से लगायी गयी रोक इनकी कोशिशों का ही नतीजा है. गीता के श्लोक 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' पर यकीन करने वाले बहुगुणा कहते हैं, "मैंने बिना फल की आकांक्षा किए हमेशा कर्म करने पर यकीन किया है, इसलिए असफलताएं या परिस्थितियां मुझे निराश नहीं करतीं. अब ज्यादा घूमना फिरना नहीं हो पाता. सुबह प्रार्थना करता हूं, अखबार देखता हूं. घर पर ही रोज कई लोग मिलने जुलने आ जाते हैं. उनके माध्यम से ही लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का प्रयास करता हूं. शाम को फिर प्रार्थना करता हूं और भोजन करके सो जाता हूं. हर संघर्ष के बाद सफलता मिलती है, मुझे भी मिली है, सबसे बड़ी सफलता तो हिमालयी राज्यों- उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में हजार मीटर से ऊपर हरे पेड़ों की कटाई पर पाबंदी है. हिमाचल में पाबंदी हटायी गयी थी, मैंने उस पर एक वक्तव्य दिया, सुप्रीम कोर्ट ने उस को नोटिस लेकर हिमाचल सरकार को तलब किया और फिर वह पाबंदी बहाल कर दी गयी. मैंने अपनी सारी लड़ाई हिमालय पर केंद्रित कर दी है और अपने मिशन का नाम 'हिमालय बचाओ' रखा है. दरअसल, हिमालय पूरे देश के पर्यावरण को प्रभावित करता है. आज तापमान में वृद्धि के कारण जलसंकट बढ़ रहा है. इसका समाधान प्राकृतिक बांध, वृक्षों की खेती और हिमालय की सुरक्षा में है.' वे कहते हैं सरकारों से क्या उम्मीद करना... वे तो थोड़े वक्त के लिए होती हैं. वे ईमानदारी बरतें तो पहल कर सकती हैं लेकिन समस्याओं का स्थायी हल नहीं निकाल सकतीं. स्थायी हल तो जनता ही निकालती है. जनता में जागृति लाना ही एकमात्र उपाय है, लोग वृक्ष की खेती के बारे में जागरूक हों, यही भविष्य में धरती पर जीवन को बचाये रखने का एक मात्र उपाय है.

प्रीति सिंह परिहार